License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

ओबद्याह *1:1–21*

Study Notes (Biblica)

ओबद्याह 1:1–21

ओबद्याह भविष्यद्वक्ता ने एदोम के खिलाफ न्याय के संदेश घोषित किए। ये न्याय के संदेश यिर्मयाह 49 में दर्ज एदोम के खिलाफ संदेशों के समान थे। ओबद्याह ने समझाया कि परमेश्वर एदोम के खिलाफ न्याय क्यों लाएंगे। एदोमी घमंडी थे। वे मानते थे कि उनकी सामर्थ और बुद्धि नें उन्हें सुरक्षित रखा था। इससे यह स्पष्ट होता था कि वे प्रभु और राजा के रूप में परमेश्वर के अधिकार का सम्मान नहीं करते थे। उनके घमंड से यह भी स्पष्ट होता था कि वे यहूदा के लोगों पर परमेश्वर के अधिकार का सम्मान नहीं करते थे।

परमेश्वर ने याकूब की वंशावली के लोगों के साथ वाचा करने का निर्णय लिया। एदोमी उनके रिश्तेदार थे। फिर भी एसाव और याकूब की वंशावली के लोग शांति से नहीं रहते थे। यह स्थिति सैकड़ों वर्षों से थी। एदोमियों ने यह स्पष्ट कर दिया कि वे लोग परमेश्वर और उनके निर्णयों का सम्मान नहीं करते। उन्होंने यह तब स्पष्ट किया जब यरूशलेम पर हमला हुआ था।

परमेश्वर ने 586 ईसा पूर्व में बाबेल की सेनाओं द्वारा यरूशलेम को नष्ट होने की अनुमति दी। इसी प्रकार परमेश्वर दक्षिणी राज्य के खिलाफ न्याय लाए। एदोमियों ने इस बात का सम्मान नहीं किया कि परमेश्वर अपने लोगों (परमेश्वर के लोग) के खिलाफ कार्रवाई कर रहे थे। इसके बजाय उन्होंने कार्रवाई की और दक्षिणी राज्य की पीड़ा को और बढ़ा दिया। ओबद्याह ने कई बुरी चीजों की व्याख्या की जो एदोमियों ने दक्षिणी राज्य के लोगों के साथ की थी। बाइबल के अन्य भाग दिखाते हैं कि यरूशलेम के लोग इसके बारे में कैसा महसूस करते थे। भजन संहिता 137 और विलापगीत अध्याय 2 और 4 इसके उदाहरण हैं।

ओबद्याह ने घोषणा की कि परमेश्वर एदोमियों को उनके घमंड और बुरे कामों के कारण नाश कर देंगे। ओबद्याह ने उस न्याय के समय को प्रभु का दिन कहा। यह वह समय था जब परमेश्वर केवल एदोम का ही नहीं बल्कि सभी राष्ट्रों का न्याय करेंगे। ओबद्याह ने परमेश्वर के क्रोध को एक प्याले की तरह वर्णित किया जिससे राष्ट्र पीएंगे। राष्ट्रों के खिलाफ न्याय का परिणाम परमेश्वर की प्रजा के लिए आशीष होगा। वे वाचा की आशीषों का आनंद लेंगे। इसमें उस भूमि में सुरक्षित रूप से रहना शामिल था जिसे परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार की वंशावली को वादा किया था। इसमें परमेश्वर की उपस्थिति की आशीष भी शामिल थी। यही अर्थ था कि सिय्योन फिर से पवित्र पर्वत होगा। परमेश्वर ने इस आशीष के समय को एक राज्य के रूप में वर्णित किया जो उन्हीं का था।

यहूदी इस आशा के संदेश को भविष्य के लिए एक भविष्यद्वाणी के रूप में समझने लगे। यह तब पूरा होगा जब परमेश्वर मसीहा को भेजेंगे। नए नियम के लेखकों को यह समझ में आ गया कि यीशु ही मसीहा हैं। यीशु ने घोषणा की कि वे पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य लाए हैं।